thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष 72 अंक 1
सृष्टि संवत् 1960853116
5 अप्रैल 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 1, 2/5 अप्रैल 2015 तदनुसार 24 चैत्र सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तू परम धन देता है

-स्व० श्री स्वामी वेदानन्द जी (दयानन्द) तीर्थ

त्वमग्न उरुशंसाय वाघते स्याहं यद्रेक्णः परमं वनोषि तत्।
आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्सि प्रदिशो विदुष्टरः
-ऋ. 1/31/14

शब्दार्थ- हे **अग्ने** =सर्वोन्नतिसाधक परम पिता परमेश्वर ! **यत्**= जो **स्याहम्**= चाहने योग्य **परमम्**= परम,सबसे अच्छा **रेक्णः** = धन है **तत्** = वह **त्वम्**= तू **उरुशंसाय**= अत्यन्त प्रशंसनीय **वाघते**= उपासक को **वनोषि** = सम्मान सहित देता है। तू **आध्रस्य**= दुर्बल का **चित्+प्रमति**= निश्चित चिताने वाला **पिता**= रक्षक **उच्यसे**= कहा जाता है, तू **विदुःतर**= अधिक ज्ञानी **पाकम्**= पवित्रात्मा को **प्र+दिशः**= उत्तम उपदेश, अपने आदेश **प्र+शास्सि**= अच्छी तरह सिखाता है।

व्याख्या= इस मंत्र में भगवान की उपासना का, पूजा का फल बताया है। प्राणिमात्र संग्रह में तत्पर है। पिपीलिका से लेकर बुद्धिमद्वरिष्ठ मनुष्य तक सभी संचय में निमग्न है। सभी को धन की चाह है। धन के बिना सभी को निधन= मृत्यु दिखाई देता है। धन को तृप्ति का साधन समझा जाता है। अन्न, वस्त्र, पशु, गृह तथा अन्य सम्पत्ति धन है। पिपीलिका अन्नकण चयन में लीन है, ऐसे ऋतु में जब बाहर निकलना असंभव सा हो जायेगा उसके लिये प्रबन्ध करने की चिन्ता में वह दिन रात घूमती है। मनुष्य को भी अपनी वृद्धावस्था, आतुरावस्था एवं परिवार परिजन के रक्षण की व्यग्रता है। आपातत: ऐसा प्रतीत होता है कि जन्तुओं की अपेक्षा मनुष्यों की आवश्यकताएं भी अधिक हैं, अत: मनुष्य का संचय भी अधिक और विलक्षण होता है जो धन तृप्ति का साधन होना चाहिये था, जिसके अभाव में निधन प्रतीत होता था, उसके प्राप्त होने पर तृप्ति न होकर लालसा बढ़ जाती है और अब मनुष्य के लिये धन नहीं रहता, वरन् धन के लिये मनुष्य हो जाता है। कितनी भयंकर विडम्बना है किन्तु ज्ञानी मनुष्य तो इसको निधनवान मान कर इनसे ऊपर उठता है क्योंकि उसके मत में-

या ह्येव पुत्रैषणा सा वित्तैषणा या वित्तैषणा सा लोकैषणा,
उभे ह्येते एषणे एव भवतः।। **-बृहदा. 4/4/22**

जो पुत्रैषणा =पुत्र की कामना है, वही वित्तैषणा=धन की लालसा है, जो वित्तैषणा है, वहीं लोकैषणा=सांसारिक मान-बड़ाई की इच्छा है। ये दोनों पुत्रैषणा तथा लोकैषणा एषणा ही हैं।

पुत्र-कलत्र भी मनुष्य तृप्ति के लिये ही चाहता है। उनमें घटती-बढ़ती का तारतम्य देखकर, जब उनसे तृप्ति नहीं होती, तब उनसे निर्विण्ण होकर उस धन की कामना करता है, जिसमें वृद्धि-ह्रास नहीं होते, जिसके सम्बन्ध में कहा गया है-

एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य न वर्द्धते कर्मणा नो कनीयान्।
तस्यैव स्यात्पदवित्तं विदित्वा न लिप्यते कर्मणा पापकेन।।
-बृहदा. 4/4/23

ब्राह्मण के धन की यह बड़ाई है कि न व कर्म से बढ़ता है और न घटता है, उसी को यह प्राप्त समझना चाहिये जो इसे प्राप्त करके पापकर्म से लिप्त न हो। वही स्याहं, परम रेक्ण= चाहने योग्य परम धन है।

तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन
तपसाऽनाशकेनैतमेव विदित्वा मुनिर्भवति।।
-बृहदा. 4/4/24

ब्राह्मण लोग इसी को वेद के अनुवचन द्वारा, यज्ञ के द्वारा, दान और तप के द्वारा जानना चाहते हैं। जो इसे जान लेता है, वह मुनि हो जाता है, चुप हो जाता है।

वेद स्पष्ट कह रहा है कि यह धन- **उरूशंसाय वाघते** अत्यन्त प्रशंसनीय उपासक को मिलता है।

जब मनुष्य अपने आप को दुर्बल मान कर उसकी शरण में जाता है, तब वह पिता की भाँति उसकी सार-संभाल करता है- **आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता**- तू दुर्बल की तो रक्षा करने वाला, चिताने वाला, पिता कहाता है। इतना ही नहीं जो अनन्यभाव से उसे प्राप्त करता है उस **प्र पाकं शास्सि प्रदिशो विदुष्टरः** पवित्रात्मा को तू अतिज्ञानी सब उत्तम आदेशों का उपदेश कर देता है, अर्थात् ज्ञान की गहराइयों तक ले जाकर उसे सब आत्मिक, जागतिक विधानों का ज्ञान करा देता है। इससे बढ़ कर और क्या धन हो सकता है ?

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

आर्यसमाज की स्थापना से संसार में नए युग का शुभारम्भ

-ले० श्री मनमोहन कुमार आर्य पताः 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

यह संसार विगत लगभग 2 अरब वर्षों से अस्तित्व में है। इस अवधि में नाना महत्त्वपूर्ण ऐतिहासक घटनायें घटी हैं परन्तु उनमें से कुछ थोड़ी सी घटनाओं के दिन व तिथियां ही ज्ञात हैं। आज से 140 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल पंचमी तदनुसार 10 अप्रैल 1875 को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई के गिरगांव मोहल्ले के काकड़वाड़ी स्थान में प्रथम आर्य समाज की स्थापना वहां के निवासियों के अनुरोध पर की थी। अगले दिन उन्होंने अपने एक शिष्य श्री गोपाल राव हरि को पत्र में इसका विवरण दिया था। यह पत्र आर्य समाज की स्थापना तिथि का सबसे अधिक प्रमाणिक दस्तावेज है। सबसे पहला प्रश्न यह है कि आर्य समाज की स्थापना क्यों की गई ? संसार में देशी व विदेशी अनेक मत-मतान्तर तो थे हीं, फिर आर्य समाज की स्थापना करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका उत्तर भी उतना व उससे अधिक महत्वपूर्ण है। इसका मुख्य एक वाक्य का उत्तर तो यह है कि उन दिनों सत्यधर्म का लोप हो गया था, कोई सत्य मत, सत्य धर्म, सत्य सम्प्रदाय व सत्य पंथ नहीं था जो यह बताता कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है ? इस उद्देश्य की प्राप्ति के उपाय क्या हैं ? यह संसार किसने, कब, किससे व क्यों बनाया और मनुष्यों आदि प्राणियों को किसने व क्यों जन्म दिया ? मनुष्य के शरीर में जो चेतन तत्व है क्या वह अनित्य है व नित्य, अनादि है व सादि, अजन्मा है या उत्पन्न होने वाला, अविनाशी है या विनाशी ? इन व ऐसे अनेक प्रश्न थे जो अनुत्तरित थे। यह भी प्रश्न था कि यदि यह संसार ईश्वर जैसी किसी सत्ता से बना है तो उस ईश्वर का सत्य स्वरूप कैसा है और क्या वह भी सत्य, अनादि, नित्य, अनुपम, सर्वज्ञ, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सभी प्राणियों का माता-पिता के समान सुहृद व हिताकांक्षी है अथवा नहीं ? महर्षि दयानन्द के पास इन सब प्रश्नों एवं और अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर थे। इन सब प्रश्नों के सही-सही उत्तर देने और संसार से अज्ञान, अन्धविश्वास, भेदभाव, अशिक्षा हटाकर सबको समान अधिकार दिलाने के लिये महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी, अतः आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य युक्ति, तर्क व प्रमाण सिद्ध है।

अब प्रश्न है कि आर्य समाज ने किया क्या है ? इसे भी संक्षेप में जान लेते हैं। आर्य समाज ने पहला कार्य तो यह किया कि प्रायः सभी विषयों पर सत्य मान्यताओं से युक्त एक युगान्तरकारी धर्म ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश संसार के लोगों को दिया है।

हम समझते हैं कि यही वर्तमान समय का मानव जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी धर्म ग्रन्थ है। जो मनुष्य इसका अध्ययन कर इससे लाभ ले रहे हैं वह भाग्यशाली हैं और अन्य जिन्होंने इसका महत्त्व नहीं समझा उनका हतभाग्य है। सत्यार्थ प्रकाश में 14 समुल्लासों में सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम 10 अध्याय या समुल्लास ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध के हैं जिनमें ईश्वर के स्वरूप, गुणों व कार्यों का अद्भुत वर्णन है। इसमें बताया गया है कि वेद आदि शास्त्रों में ईश्वर के भिन्न-भिन्न नाम ईश्वर के अनेकानेक गुणों व हमसे सम्बन्धों आदि के कारण हैं परन्तु उसकी सत्ता केवल एक है।

दूसरे समुल्लास में शिक्षा, तीसरे में अध्ययन-अध्यापन विधि व पाठ्यक्रम, चौथे में समावर्तन, विवाह और गृहस्थाश्रम विषय, पांचवे में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम, छठे में राज-प्रजा-धर्म विषय, सातवें में ईश्वर और वेद विषय, आठवें में सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय विषय, नौवें में विद्या-अविद्या, बन्धन और मोक्ष विषय तथा दशम् समुल्लास में आचार-अनाचार, भक्ष्य और अभक्ष्य विषयों का विस्तार से युक्ति व वेद शास्त्र प्रमाण सिद्ध वर्णन है। इसकी सत्यता की साक्षी हमारी सब लोगों की आत्मायें हैं। उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में मत-मतान्तरों की असत्य व अन्धविश्वासों से युक्त बातों का दिग्दर्शन कराकर उनकी सर्वजनहितार्थ समीक्षा की गई है जिससे पाठक सत्य व असत्य का निर्णय कर सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग कर महर्षि दयानन्द ने अपने विद्यार्थी काल में जो पांच की आयु में आरम्भ हुआ था, यहां से 21 वर्ष तक की आयु में घर पर रह कर तथा इसके पश्चात् सन् 1846 में उनके टंकारा, राजकोट से गृहत्याग से आरम्भ होता है तथा सन् 1863 तक के 17 वर्षों तक चला जिसमें उनके द्वारा देश का भ्रमण कर जहां जो भी गुरु, ज्ञानी व योगी मिला उससे ज्ञान प्राप्त किया। यहां तक की हिमाच्छादित पहाड़ों के शिखरों में जाकर वहां कन्दराओं में भी ज्ञानी गुरुओं व योगियों की तलाश की और जहां जो मिला, उससे जो कुछ भी सीख सकते थे, सीखा। अन्ततः उन्हें प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का पता मिला जो मथुरा में निवास करते थे और वहां वेद व्याकरण अष्टाध्यायी महाभाष्य निरूक्त पद्धति का अध्ययन कराते थे। इन गुरु जी से अध्ययन कर महर्षि दयानन्द की सभी शंकाओं का निराकरण हुआ था। इस समस्त अध्ययन व परीक्षा के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पूर्ण शुद्ध व रात्य ज्ञान से युक्त संसार में सबसे प्रमाणित ग्रन्थ केवल ईश्वर प्रदत्त ज्ञान प्रचार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद ही हैं। वेदों के बाद, 4 उपवेद, 6 वेदांग और 6 उपांग अर्थात् 6 दर्शन योग, सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक, न्याय व मीमांसा का भी तत्वज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान है। अतः उन्होंने सभी मत-मतान्तरों की समीक्षा वेद ज्ञान के आलोक में की और वेदानुकूल को सत्य तथा वेद विरुद्ध को मिथ्या सिद्ध किया। तर्क व युक्ति तथा सृष्टि क्रम के अनुकूल सिद्धान्त का प्रयोग करने पर भी वेदानुकूल ही सत्य सिद्ध होता है तथा वेद विरुद्ध मान्यतायें व विश्वास-आस्थायें असत्य सिद्ध होती हैं। अतः सत्यार्थ प्रकाश लिख देने के बाद भी उन पर यह दायित्व आ गया कि वह वेदों का भी सरल व सुबोध भाष्य करें। अतः वह इस कार्य में भी प्रवृत्त हुए और सबसे पहले उन्होंने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नाम का विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। इसे देश-विदेश के सभी प्रमुख व प्रतिष्ठित विद्वानों को समीक्षार्थ भेजा गया जिनमें प्रो. मैक्समूलर भी सम्मिलित थे। यदि कभी किसी ने इनकी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पर कोई शंका व टिप्पणी की तो महर्षि दयानन्द ने उसका प्रमाण पुरस्सर उत्तर दिया। स्वामी जी ने सभी शंकाकर्त्ताओं को निरूत्तर कर दिया। इस प्रकार से वेदों के भाष्य का कार्य आरम्भ हुआ। महर्षि दयानन्द ने वेदों की भूमिका के बाद ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का कार्य भारी पुरूषार्थ करके किया। उन्होंने यजुर्वेद का पूरा भाष्य किया। वह ऋग्वेद के 10 मण्डलों में से 7वें मण्डल का आंशिक भाष्य ही कर पाये थे कि उनको जोधपुर में विष दे दिया। इसके बाद कुछ समय तक वह विष के प्रभाव से रूग्ण रहे और 30 अक्तूबर, 1883 ई. को अजमेर में दीपावली के दिन देहत्याग कर मुक्त हो गये। उनका शेष कार्य उनके अनुगामी अनेक आर्य विद्वानों ने पूरा किया। आज चारों वेदों का महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों का किया हुआ वेद भाष्य उपलब्ध है जिसका अध्ययन किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द के युगान्तरकारी वेदभाष्य के आधार पर आजकल की आवश्यकता के अनुरूप इसके सरल व सुबोध संस्करणों की आवश्यकता अनुभव की जाती है। भविष्य में हमारे आर्य समाज के कुछ जागरूक अधिकारी व विद्वान इस कार्य को अवश्य पूरा करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि, आर्याभिविनय, गोकरूणानिधि, व्यवहारभानु व अनेक लघु ग्रन्थ व व्याकरण आदि की पुस्तकें लिखीं व प्रकाशित कराई।

उनका समस्त उपलब्ध पत्रव्यवहार भी प्रकाशित हुआ है जिसके लिए सारा आर्य जगत मुख्यतः पं. भगवद्दत्त रिसर्चस्कालर एवं पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी का आभारी है। अब धर्म-कर्म को जानने व करने के लिए कहीं कुछ कमी नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इतने ग्रन्थों का प्रणयन किया व अपने पूर्ववर्तियों के साहित्य की ओर संकेत किया है कि जिसका अध्ययन कर मनुष्य जीवन के लक्ष्य धर्म अर्थ काम व मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। अभी हमने महर्षि दयानन्द के कार्यों का वर्णन किया है, अब कुछ आर्य समाज के विगत 1 शताब्दी से अधिक समय में सम्पन्न कार्यों पर भी दृष्टि डालते हैं। पहला कार्य तो महर्षि दयानन्द ने धार्मिक अन्धविश्वास दूर करने का किया था। (शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकोय.....

मनुष्य का अपने समाज के प्रति दायित्व

सामाजिक जीवन के विशुद्ध स्वरूप को समझे बिना कोई भी व्यक्ति अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का भली-भांति पालन करने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिए अपने इस सामाजिक जीवन को सर्वप्रथम समझना अत्यन्त जरूरी है। जीवन का अर्थ है क्रियाओं का निरन्तर प्रवाह और सामाजिक जीवन का अर्थ हुआ हमारी वह सभी चेष्टाएं और क्रियाएं जिनसे हमारा समाज प्रभावित हो सकता है अर्थात् हमारी जो चेष्टाएं और क्रियाएं हमारे समाज पर अच्छा और बुरा प्रभाव डालती हैं वह सभी हमारे जीवन अंग हैं। वैदिक साहित्य और संस्कृति में मनुष्य को सामाजिक प्राणी माना गया है। किसी भी मनुष्य का विकास समाज के बिना नहीं हो सकता और किसी भी समाज का गठन मनुष्यों के बिना नहीं हो सकता। इसलिए समाज और व्यक्ति दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। जब हम इस अटल सत्य को स्वीकार करते हैं तो फिर हमें यह भी मानना पड़ेगा कि प्रत्येक व्यक्ति या मनुष्य के अपने समाज के प्रति कुछ जरूरी कर्त्तव्य भी हैं। जिस अवस्था में कोई मनुष्य अपने समाज सम्बन्धो कर्त्तव्यों का पालन करता है। वह उसका सामाजिक जीवन समझा जाता है, अर्थात् हमारे सभी कर्म जिनसे समाज के उपर अच्छा और बुरा प्रभाव पड़ता है वही मनुष्य का सामाजिक स्वरूप है।

परिवार ग्राम और नगर तथा राष्ट्र ये सब समाज के ही रूप हैं। इन सबके साथ व्यक्ति का कैसा व्यवहार होना चाहिए। यह सब मर्यादाएं बनी हुई हैं। ऐसी मर्यादाओं का पालन करना ही मनुष्य का सामाजिक धर्म माना जाता है। इस सामाजिक धर्म का पालन करना ही उसके सामाजिक जीवन का विशुद्ध और वास्तविक स्वरूप समझना चाहिए। अपने धर्म का पालन करना मनुष्य के लिए कितना अनिवार्य है इसका संकेत हमें आर्य समाज के आधारभूत दस नियमों में से छठे नियम में मिलता है जिसकी रचना आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने निम्न शब्दों में की है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इससे पता चलता है कि अपने समाज की उन्नति करना मनुष्य का अनिवार्य धर्म है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए जितना अपनी शारीरिक और आत्मिक उन्नति करना आवश्यक है उतना ही सामाजिक उन्नति करना अनिवार्य है। हर व्यक्ति अपने समाज की उन्नति में सहायक बनें क्योंकि उन्नत समाज के बिना व्यक्ति का विकास भी सम्भव नहीं है। इसलिए सामाजिक उन्नति को ध्यान में रखते हुए वेद में मन्त्र आया है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।

संगठन सूक्त के इस मन्त्र में हमें शिक्षा दी गई है कि सामाजिक उन्नति के लक्ष्य को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब तक हमारे अन्दर एकता की भावना न हो। वेद के मन्त्र में हमें शिक्षा दी है कि हम सामाजिक उन्नति का लक्ष्य लेकर मिलकर चलें , हमारे विचार एक हों, हमारे मन की भावना एक हो अर्थात् कहीं भी स्वार्थ की भावना न हो। जहां स्वार्थ की भावना आ जाती है वहां पर हम अपने लक्ष्य से दूर होते जाते हैं। इसलिए सामाजिक हित के लिए हम एकजुट होकर कार्य करें।

सामाजिक उन्नति का अर्थ है समाज में प्रचलित कुरीतियों, दूषित परम्पराओं और संकीर्ण तथा स्वार्थपूरक परम्पराओं को बदल कर समाज की ईकाई रूपी सभी व्यक्तियों की शारीरिक और आत्मिक उन्नति के उपयोगी साधनों की उपलब्धियों और उनके प्रयोग से व्यक्तियों का उत्थान करना जिस से व्यक्तियों के आपसी सम्बन्धों में मधुरता और दृढ़ता आ सके। जिससे यह सामाजिक सम्बन्ध पनपते रहे। प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक धर्म यह प्रबल मांग करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता, सामर्थ्य और अपने विशेष गुणों से समाज की शारीरिक , आत्मिक और सामाजिक व आर्थिक उन्नति को बढ़ाने के लिए यथा सम्भव और अधिक से अधिक योगदान देता रहे। मनुष्य तभी उन्नत और खुशहाल रह सकता है जब उसके आसपास का वातावरण खुशहाल हो। अगर सारा समाज दुखी है तो हम सभी साधनों से सम्पन्न होते हुए भी सुखी नहीं रह सकते। इसलिए मनुष्य जितनी अपनी उन्नति का प्रयत्न करता है उतना ही समाज की उन्नति के लिए भी प्रयत्न करता रहे। सामाजिक उन्नति में व्यक्ति की उन्नति सम्भव है। अनुशासनहीनता व्यक्ति का एक महान सामाजिक अपराध माना जाता है। इस दोष का दोषी व्यक्ति कभी भी अपने समाज के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के दसवें नियम में लिखा है- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। अनुशासन का अर्थ है सामाजिक नियमों और परम्पराओं का पालन करना है। जो व्यक्ति सदा स्वछन्द चलने का अभ्यासी बन चुका है और प्रत्येक व्यवस्था व मर्यादा की अवहेलना करता है, जिसमें कोई विशेष गुण न हो, जिसने स्वयं की शारीरिक और आत्मिक उन्नति नहीं की है वह समाज के लिए किसी भी प्रकार उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। विकसित मनुष्य ही समाज के विकास में साधक हो सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्षण समाज से लाभ उठा कर समाज का ऋणी बनता जा रहा है। यदि वह समाज के ऋणों से उऋण नहीं होता है तो उसकी इससे बड़ी कृतघ्नता और क्या हो सकती है। अपने समाज के प्रति कृतज्ञता की भावना को रखते हुए यदि कोई मनुष्य समाज के विकास में योगदान देता है तो यही उनकी सामाजिक सेवा का विशुद्ध स्वरूप है। वह व्यक्ति धन्य है जिन्होंने अपनी जीवनचर्या में सामाजिक उन्नति के लिए समय रखा हुआ है। वास्तव में ऐसे महापुरूष ही दूसरों के लिए प्रकाश स्तम्भ होते हैं और उनके जीवन से जन साधारण को प्रेरणाएं मिलती हैं इसलिए हम आर्य समाज के नियमों को ध्यान में रख कर अपनी शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

यज्ञोत्सव

-ले० आचार्य मनोज कुमार शास्त्री

यज्ञ भी एक उत्सव है यह हमारे चित्त को आनंदित करने वाला है, परमात्मा से साक्षात् जोड़ने वाला है। अगर जिन्दगी को उत्सवमय और आनन्दयुक्त तथा परमात्मा के साक्षात का हेतु बनाना चाहते हैं तो अवश्य ही हम सबको यज्ञ के प्रति लौटना ही होगा, नहीं तो हमें साल में आने वाले दो चार उत्सवों का ही इन्तजार करना होगा। यज्ञ के द्वारा मनुष्य के अन्दर सद्भावना, परोकार, सदाचार-देवत्व, आत्मोत्थान, ईश प्राप्ति, मुक्ति मार्ग, परमानन्द की प्राप्ति तथा शारीरिक, अध्यात्मिक-उन्नतियाँ होती हैं तथा दुराचार से निवृत्ति होती है, यश प्राप्ति भी इन्हीं यज्ञ कर्म द्वारा होती है, जिस यज्ञ से इतने पुण्यों की प्राप्ति होती है उस यज्ञ कर्म को त्यागना मनुष्य की नीचता का ही सूचक है।

कितने प्रकार के हैं ये यज्ञ इस पर अवश्य ही विचार करना चाहिए,- परोपकार भी एक यज्ञ है, दीन हीन व्यक्ति की निस्वार्थ भाव से सेवा भी एक यज्ञ है, जीवित माता पिता की सेवा भी एक यज्ञ है, अतिथि यज्ञ, अन्त: करण द्वारा सतत् शुभ चिन्तन भी एक यज्ञ ही है, ये सभी यज्ञ के रूप ही हैं ये सभी श्रेष्ठ कार्य हैं। क्या दुनिया में इन सबसे बढ़ कर अब कोई कर्म शेष नहीं है ? अवश्यमेव। यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। अग्नि होत्र इन सब से बढ़कर श्रेष्ठ कर्म है, विचार कीजिए क्यों है ? हम सब माता पिता की सेवा इसलिए करते हैं कि वे हमारे अपने हैं और यहाँ अपनत्व की भावना ओत प्रोत रही है, और हमारे अन्दर यह भावना भी हमेशा विद्यमान रहती है कि हम माता पिता के ऋण से भी उऋण होना चाहते हैं, यहाँ हमारी कितनी ही और भी भावनाएँ हैं जो साथ में जुड़ी हुई हैं। परन्तु अब विचारिए कि अग्निहोत्र (देव यज्ञ) सर्वश्रेष्ठ क्यों है ? वेद वाणी और देव वाणी के माध्यम ये हमारे ऋषि मुनियों ने इसे सर्वश्रेष्ठ कहकर पुकारा है, क्योंकि इस यज्ञ से विश्व का कल्याण होता है, कैसे होता है यह जानना बहुत ही आवश्यक है। परमात्मा ने इस सृष्टि को प्राणी मात्र के हित के लिए बनाया है, परमात्मा ने इस सृष्टि को हरा भरा तथा समस्त पदार्थों से भरपूर जो हमारे जीवन के लिए परमोपयोगी हैं उन्हें प्रदान कर हमें सौभाग्य युक्त किया है। इस समस्त जगत में ऐसे-ऐसे पदार्थ हैं जिनसे मनुष्य अपने उन्नति के पथ की ओर अग्रसर है। मनुष्य इन पदार्थों को इसी धरातल से प्राप्त करता है तथा नये-नये आविष्कार कर अपना तथा अपने देश का नाम कमाता है, आज का दौर प्रति स्पर्धा का दौर है; आज लोग वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, आज नये-नये आविष्कार होने के कारण हमारी प्रकृति का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। आज भौतिकता की इस अन्धी दौड़ में हर कोई सबसे आगे निकल जाना चाहता है। आज कारखानों और फैक्ट्रियों से गंदा धुआँ तथा गंदा पानी हमारे इस वातावरण पर विपरीत असर उत्पन्न कर रहे हैं। तथा आजकल मोटर वाहन भी इतने हो गये हैं कि साँस तक लेना मुश्किल हो गया है, जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है, वनों का अत्यधिक कटान, वनों की कमी, जमीं की कमी, पृथ्वी का बढ़ता तापमान। प्रकृति की इन्हीं असहनीय दशा के कारण कहीं सुनामी, कहीं भूकम्प, बाढ़, बादलों का फटना, ज्वालामुखी विस्फोट इत्यादि अनेक ऐसे कारण हैं जिनके कारण पृथ्वी पर प्राणी मात्र का जीवन खतरे में पड़ गया है। तथा सबसे बड़ी विचारणीय बात यह है कि इन सब का असर मनुष्य के शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास पर पड़ रहा है। आज मनुष्य का शारीरिक पतन होता जा रहा है क्योंकि आज वातावरण में अनेक जहरीली गैसों का सम्मिश्रण हो गया है, जिसका सीधा प्रभाव मनुष्य के शरीर पर पड़ रहा है। मनुष्य का शरीर विकारों का घर हो गया है; शरीर अस्वस्थ होने के कारण विचार भी अस्वस्थ हो रहे हैं। समाज में आज सब जगह पाप, अत्याचार, हिंसा, कुटिलता, व्यभिचार इत्यादि दुर्भावनाओं का बोलबाला हो गया है। समाज की इन समस्त विपरीत परिस्थितियों का मनुष्य शरीर के ऊपर सीधा प्रभाव पड़ता है। आज सभी के अन्तकरण मलिनता से भर गये हैं। आज यदि कोई व्यक्ति किसी के साथ अच्छा व्यवहार भी करता है दूसरा व्यक्ति यही सोचता है कि ज़रूर इस व्यक्ति का इसमें स्वार्थ होगा। ऐसा क्यों ? क्योंकि कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो अच्छाई का मुखौटा पहनकर लोगों को धोखा देने में तत्पर हैं, यही कुछ कारण है कि लोगों का धर्म और मानवता से विश्वास उठता ही जा रहा है। आज एक सच्चे इन्सान की पहचान करना जटिल सा कार्य हो गया है। आज हर कोई लाला बना हुआ है, कोई रोजमर्रा की वस्तुओं को बेचता है तो कोई अपनी वाणी को कोई अपने चरित्र को। सोचा है ऐसा क्यों ? इसलिए क्योंकि आज हमारा जीवन यज्ञमय नहीं है हमारा जीवन संकल्पमय नहीं है। आज लोग इतने शातिर हो गये हैं कि अपने स्वार्थ के लिए अपने ही परिजनों का गला घोंट देते हैं। आज बेईमानी सब की नश-नश में बस गई है। ईमानदारी जैसा शब्द आज केवल सुनने मात्र में रह गया है। अगर आज कोई व्यक्ति ईमानदारी जैसा शब्द का प्रयोग करता है तो कहते हैं शास्त्री जी क्या बात करते हो दिखाओ तो सही इस दुनिया में कौन है ईमानदार। चोर चोर सब मौसेरे भाई। ऐसा क्यों ? क्योंकि हमने अपने अतीत को भुला दिया स्वाध्याय छोड़ दिया, विचारना छोड़ दिया, सत्संग छोड़ दिया। जिन पञ्च तत्त्वों से यह ब्रह्माण्ड बना है उन्हीं पञ्च तत्वों से आपका हमारा सबका शरीर बना है यदि भौतिक उन्नति के साधन इस बाह्य ब्रह्माण्ड में हैं तो आत्मोत्थान के सारे साधन हमारे भीतर विद्यमान हैं। जरूरत है संकल्प की, कुछ कर गुजरने की। जिसने संकल्प कर लिया उसकी तो हृदयेश भी सुनते हैं सहायता करते हैं। हम अकेले नहीं परमात्मा हमारा साथी है ; उसने तो हमें कभी छोड़ा ही नहीं। अकेले महर्षि वेद विद्या का इतना प्रचार कर सकते हैं तो हम आप अपने जीवन को यज्ञमय क्यों नहीं बना सकते। होता हैं सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं प्रभु यज्ञ से। आज आर्य समाज भी केवल हफ्ते में एक बार ही खुलने लगी हैं ऐसे में कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा कैसे सार्थक हो पाएगा। आज हम समस्त आर्य पारिवारिक जन मिलकर फिर से इस नारे को सार्थक बनाने का संकल्प लें। यदि आज हम सब प्रकृति के कोप भाजन से बचना चाहते हैं तो आओ फिर से इस समस्त जगत को वेद की ऋचाओं से मधुर बना दें। जब घर-घर में पवित्र यज्ञ हुआ करेगा वातावरण शुद्ध होगा तो ओजोन का क्षरण रुकेगा, तभी तो मन, ओज भी इस जगत में सुरक्षित रहेगा। पृथ्वी का शृङ्गार वृक्ष हैं जब यह हरियाली होगी पृथ्वी प्रसन्न होगी, यज्ञ का सार सुगन्धि है, यदि इस यज्ञ से सुगंधि उठेगी तो ही पृथ्वी पर हरियाली होगी। यदि पृथ्वी हरी होगी और मन संस्कारों से भरा होगा तो ही हमारा राष्ट्र समृद्ध होगा। आज यज्ञ विलाप करता है कि मेरा श्रृंगार करो पृथ्वी रुदन करती है कि मेरा श्रृंगार करो और यह मानवता रुदन करती है कि इस मनुष्य का परिष्कार करो। मैं पहले ही वर्णन कर चुका हूँ कि पृथ्वी का श्रृंगार वनस्पत्तियाँ हैं और हरियाली समस्त मानवता की खुशहाली है। यज्ञ का श्रृंगार समस्त प्रकार की ओषधियों के प्रयोग द्वारा तथा घृत द्वारा समस्त जगत का उपकार करना है यह समस्त जगत यदि प्रसन्न हो जाएगा, यदि इस यज्ञ से सुगंधि उठेगी तो यह का श्रृंगार हो जाएगा। आपका समस्त परिवार यदि इस यज्ञ का तथा अग्नि देव की उपासना करेगा और वेद की रहस्यमयी बातों का चिन्तन करेगा, यदि आपके बच्चों का बोलचाल व्यवहार परिष्कृत हो जाएगा, तो उनका परिष्कार) हो जाएगा। इस प्रकार हमारे घरों में रोज उत्सव मनाया जाया करेगा जिसे एक शब्द में कह सकें गे यज्ञोत्सव।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की अपूर्वता

-ले० श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य, होशियारपुर

महार्ष दयानन्द के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं, कि शिव मन्दिर में घटित घटना के कारण मूल शंकर ने चौदह वर्ष की आयु में सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा की थी। इस के चार वर्ष पश्चात् प्रिय चाचा की मृत्यु पर मृत्यु के रहस्य को जानने और मृत्यु विजय की भावना वाली गांठ पहली गांठ के साथ आकर और जुड़ गई। इस उलझन को सुलझाने की उधेड़-बुन के दिनों में जो भी साधु, महात्मा मूल को मिला, उसी से ही इन प्रश्नों का समाधान पूछा। मूल की बदली हुई परिस्थिति को देखकर माता-पिता ने उस के विवाह की तैयारियां शुरू कर दीं। तब एक दिन 21 वर्ष का मूल सायं काल को जल का पात्र लेकर सदा के लिए घर से चल पड़ा।

पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी फिर दयानन्द स्वामी बन कर गुरु की खोज में लगातार चौदह वर्ष तक मैदानों, पहाड़ों, जंगलों की खाक छानी। जहां-कहीं किसी गुरु का पता चला, वहां पहुंच कर योग और शास्त्र का अभ्यास किया। अनेक घाटों पर घूमने के पश्चात् दयानन्द संन्यासी गुरु विरजानन्द जी दण्डी की कुटिया पर मथुरा पहुंचे। ढाई-तीन वर्ष अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया और साथ ही साथ योग साधना चलती रही।

एक दिन कुछ लौंग लेकर निदाई की दृष्टि से दयानन्द गुरु चरणों में पहुंचे। विद्या प्रदान के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हुए विदा की अनुमति मांगी। उस समय गुरु-शिष्य में जो विचार-विमर्श हुआ, उसने स्वामी दयानन्द के जीवन का कांटा ही बदल दिया।

संसार के इतिहास की यह एक अभूतपूर्व घटना है, कि एक 21 वर्षीय शिक्षित युवक चौदह वर्ष लगातार भटकने के बाद एक गुरु को प्राप्त करता है। ढाई-तीन वर्ष उनके चरणों में बैठ कर विशेष शिक्षा प्राप्त करता है। अपनी चौदह और अठारह वर्ष की आयु में की हुई प्रतिज्ञाओं को बदल कर गुरु की आज्ञा के पालन में जुट जाता है। जिस साध की सिद्धि के लिए घर छोड़ा, लगातार सत्तरह वर्ष घूम कर योग तथा शास्त्र का अभ्यास किया। जब साध सिद्धि के निकट आई, तो उसे छोड़ कर जनता जनार्दन की सेवा तथा सत्यपथ प्रदर्शन में दिन-रात एक कर दिया।

नाम विचार- ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी की आज्ञा के अनुरूप आर्ष ज्ञान का प्रदीप लेकर जनता के अज्ञान, अन्धविश्वास को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत में प्रचार प्रारम्भ किया। इस आर्षज्ञान के दीपक को सदा प्रज्वलित रखने के लिए विधिवत आर्य समाज की स्थापना/ बम्बई/मुम्बई में 1875 को की। महर्षि ने अपने विशाल स्वाध्याय, विचार और पर्याप्त वर्षों के अनुभव के आधार पर प्रत्येक पहलू से सोचकर इस संगठन का नाम आर्य समाज रखा। जो प्रत्येक प्रकार से सार्थक और उपयुक्त है। क्योंकि आर्य शब्द जहां उच्चारण में सरल, श्रवण में सरस मधुर आकर्षक और स्पष्ट रूप से गतिशील, श्रेष्ठ अर्थ वाला है। वहां यह शब्द भारतीय साहित्य, परम्परा से भी सम्बन्धित है। यतो हि प्राचीन भारतीय साहित्य में इस का प्रचुर प्रयोग किया गया है।

आर्य शब्द का प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण और सार्वकालिक-सार्वभौमिक तथा सार्वजनीन है, कि किसी भी देश का नागरिक जहां-कहीं, जब-कभी इस का प्रयोग करना चाहे, कर सकता है। यह किसी भी दृष्टि से किसी काल एवं स्थान पर प्रतिकूल नहीं बैठता। प्रयोग करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा और भावना को यह आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है।

उद्देश्य- संगठन के नाम में प्रयुक्त आर्य शब्द से यह भी स्वत: स्पष्ट हो जाता है, कि यह संगठन भारतीय परम्परा, साहित्य, संस्कृति, धर्म में से उसी को ही स्वीकार करता है। जो आर्य = श्रेष्ठ, अच्छा हो या आर्यत्व का साधक, सहायक वा एतदर्थ उपादेय हो। अत: आर्य समाज भारतीय साहित्य, परम्परा आदि भारतीयता में से उसी का ही ग्राहक और समर्थक है। जो-जो आर्य शब्द से संगत, समन्वित है। आर्य समाज के इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है, कि आर्य समाज केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह एक सार्वभौम संस्था है। अत: जहां-कहीं जो कुछ भी श्रेष्ठ है, सब के कल्याण का आधार है, वह उस का पोषक है। जैसे कि मानव जाति की भलाई की दृष्टि से जिस ने भी जिस-किसी क्षेत्र में कार्य किया है या कर रहा है, वह उस का प्रशंसक और सहायक है। वह विषय चाहे शरीर से सम्बद्ध-अन्न-वस्त्र-भवन-प्रशासन-चिकित्सा-शिक्षा-संचार के रूप में हो या सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़ा हो।

कार्य- इतिहास के पृष्टों को पलटने से पता चलता है, कि आर्य समाज ने गत 139 वर्ष के काल में विविध क्षेत्रों में बहुत कार्य किया है। विशेषत: स्वाधीनता, समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में। एतदर्थ उन दिनों के हजारों आर्यों ने अनेक तरह के बलिदान दिए, विविध प्रकार के तप तपे, बहिष्कार सहे। उन के इन गौर व पूर्ण कृत्यों को देख कर स्वत: यह उक्ति चरितार्थ होती है, कि 'लाये हैं किश्ती तूफानों से निकाल कर'। ऐसे बलिदानों का ही यह प्रभाव है, कि आज नारी-शिक्षा, विदेशगमन, छुआ-छूत निवारण जात-पात के अपसारण को कोई धर्म विरुद्ध कह कर किसी प्रकार का विरोध प्रकट नहीं करता। अपितु कल तक इस दृष्टि से आर्य समाज का जो विरोध करते थे। वे स्वयं अब कन्या विद्यालय-महाविद्यालय चला रहे हैं और उन के धर्मोपदेशक एवं परिजन विदेशों में जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति का अनुशीलन करके एक विचारशील यह सोचने पर विवश हो जाता है, कि इस अपूर्वता का क्या कारण है? इस दृष्टि से जब हम विश्लेषण करते हैं, तो हमारे सामने ऐसी चार विशेषतायें आती हैं। वे हैं- 1. जीवन का पूर्ण रूप, 2. वृषिवत सब के लिए एक मान्यता, 3. सत्यात्मक या वैज्ञानिक होना और 4. सरल-स्पष्ट होना।

आर्य समाज की अपूर्वता का पहला पहलू है- इस के विचार जीवन के किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं। यहां जीवन के सर्वांगीण रूप को सामने रखकर विचार दिए जाते हैं। आर्य समाज के सिद्धान्तों में जहां ईश्वर, जीव, जगत तथा उसके मूल तत्त्वों का विवेचन करके संसार-रचना का दार्शनिक विश्लेषण किया जाता है, वहां शरीर का स्वरूप, उस की रक्षा-वृद्धि तथा सामाजिक व्यवहारों को सुन्दर बनाने की भी चर्चा होती है। अत: प्रगति की पूर्णता के लिए आर्य समाज में जीवन की सभी जरूरतों की चर्चा होती है।

आर्य समाज के सिद्धान्तों की दूसरी विशेषता यह है, कि इस की मान्यतायें कृषि की तरह सब के लिए एक सी रचनात्मक, स्पष्ट, प्रत्यक्ष और परिश्रम पर निर्भर हैं। अत: आर्य समाज चमत्कारों, धार्मिक कर्मकाण्डों और फलित ज्योतिष को महत्व नहीं देता है। हां, धर्म के आचार पक्ष पर विशेष बल देता है। इसी लिए कर्म-फल व्यवस्था को आर्य संस्कृति का मूलभूत आधार मानता है।

आर्यसमाज के अनोखेपन का तीसरा कारण है- उस की विचारधारा का वैज्ञानिक होना। विज्ञान किसी क्षेत्र की सच्चाई की खोज का नाम है। वह प्रयोगों, परीक्षणों, अनुभवों के आधार पर किसी बात की सच्चाई को कार्य-कारण की व्यवस्था से स्पष्ट करता है। भौतिक विज्ञान की तरह आर्य समाज भी उन्हीं सिद्धान्तों को सत्य और मान्य मानता है। जिन में कार्य-कारण व्यवस्था होती है। इस से एक यह तथ्य सामने आता है, कि आर्य समाज के सिद्धान्त किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर नहीं हैं। वे केवल मानव संस्कृति के मूलभूत तथ्यों से ही जुड़े हुए हैं। आर्य समाज सभी महा-पुरुषों का उन की उपलब्धि के अनुरूप अभिनन्दन और सम्मान करता है, पर किसी व्यक्ति विशेष के आधार पर धर्म का विवेचन नहीं करता है।

आर्य समाज की विचारधारा की चौथी विशेषता यह है, कि इस के क्रियाकलाप सरल-सरल-स्पष्ट और प्रत्यक्ष लाभप्रद हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

thearyasamaj.org

पृष्ठ 2 का शेष-आर्य समाज की.....

नवम्बर, 1869 में उन्होंने काशी में वहां के लगभग 30 शीर्षस्थ पण्डितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ कर मूर्तिपूजा को वेद विरुद्ध सिद्ध किया था। यह शास्त्रार्थ ऐसा ही था जैसा कि लगभग 2500 वर्ष पूर्व स्वामी शंकराचार्य जी ने बौद्ध व जैन मत के आचार्यों से किया था। महर्षि दयानन्द के मूर्तिपूजा को अवैदिक सिद्ध करने के बाद आज तक भी स्थिति यह है कि कोई भी मूर्तिपूजा का मानने वाला मूर्तिपूजा के पक्ष में वेदों से एक भी प्रमाण नहीं दे सका है। इसी प्रकार से आर्य समाज ने ईश्वर के अवतार लेने की मिथ्या धारणा को भी वेद विरुद्ध और तर्क प्रमाण विरुद्ध सिद्ध किया। फलित ज्योतिष ऐसा अन्धविश्वास है जिसे अपनाकर देश व हिन्दू जाति को अतीत में अपना सर्वस्व गंवाना पड़ा था। इस कारण हमारे लाखों वीर मारे गये व बहु बेटियों को लज्जित होना पड़ा था। यह फलित ज्योतिष भी वेद विरुद्ध व युक्ति प्रमाणों के विरुद्ध है, अत: बुद्धिजीवियों द्वारा पूर्णत: त्याज्य है। इसका समाधान पुरूषार्थयुक्त जीवन है जो सफलता का आधार है। महर्षि दयानन्द के समय में स्त्री व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्होंने वेद मन्त्र 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी...' का प्रमाण देकर स्त्री व शूद्रों सहित मानवजाति के प्रत्येक व्यक्ति को वेद पढ़ने व पण्डित बनने का अधिकार प्रदान किया। सामाजिक असमानता और जन्मना जाति व्यवस्था पर भी महर्षि ने गहरी चोट की और कहा कि यह शब्द व व्यवहार निर्बुद्धि लोगों के लिए है। जो पढ़ने व पढ़ाने पर भी किंचित न पढ़े और जिसमें मूर्खतादि गुण हो वही शूद्र कहलाता है और वह श्रमिक बनकर शिक्षित व विद्वान लोगों के साथ मिलकर सेवा का कार्य करता है। परस्पर भेदभाव और छुआछूत का उसमें भी कोई स्थान नहीं है। आर्य समाज ने गुरुकुल व डीएवी कालेज खोले और वहां सभी को बिना धर्म व जाति के पक्षपात के अध्ययन करने की सुविधा प्रदान की।

मुस्लिम कन्याओं ने भी वेदों का अध्ययन कर पण्डिता बनने का अवसर प्राप्त किया। अनेक अनुसूचित जाति व जनजाति के लोग आर्य समाज के गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के शीर्ष विद्वान बने और सभी पण्डित कहलाते हैं। यह भी आर्य समाज की एक बहुत बड़ी क्रान्ति कही जा सकती है। आज भी हमारे बहुत से अनुसूचित जाति के भाई गुरुकुलों में पढ़कर आर्य समाज के आदर व श्रद्धास्पद पुरोहित का कार्य करते हैं और समाज में प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत करते हैं। यह सब महर्षि दयानन्द प्रदत्त आर्य समाज की उपलब्धियां हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल व डीएवी कालेज स्थापित कर शिक्षा जगत में आर्य समाज ने अग्रणीय भूमिका निभाई है और अविद्या का नाश कर विद्या की उन्नति की है। सभी मतों ने भी आर्य समाज की तर्क व युक्तियों से लाभ उठाया और अपनी मिथ्या मान्यताओं को तर्क संगत सिद्ध करने का प्रयास किया व छल व कपटपूर्ण प्रयास किया व करते रहते हैं। असत्य, असत्य ही रहता है, कितने भी तर्क दे दिये जाये। अज्ञानियों को तो जाल में फंसाया जा सकता है परन्तु एक बार हमने अपने वरिष्ठ विद्वान साथी स्वर्गीय प्रा. अनूप सिंह जी को प्रवचन के लिए आर्य समाज, धामावाला, देहरादून में निवेदन किया और कहा कि विश्व परिदृश्य को दृष्टि में रखकर आर्यसमाज के कार्यों का वर्णन करें। उन्होंने आरम्भ में ही श्रोताओं से पूछा था कि ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहां आर्य समाज ने अपना महत्वपूर्ण योगदान नहीं दिया? आजादी के आन्दोलन का श्रेय भी आर्यसमाज को ही जाता है। इसका एक कारण क्रान्तिकारियों के अग्रदूत व पितामह पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य थे। श्री गोपाल कृष्ण गोखले के गुरु महादेव गोविन्द रानाडे पूना भी महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन की दोनों धारायें महर्षि दयानन्द से ही प्रष्फुटित होकर आगे बढ़ी हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध में महर्षि ने जो देश प्रेम व स्वदेशीय राज्य की महत्ता पर लिखा है, वह आजादी के आन्दोलन का प्रमुख ध्येय, कारण व आधार बना। इतिहास में यह स्वीकार किया गया है कि आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले 80 प्रतिशत लोग आर्य समाज की विचारधारा व उससे प्रभावित थे। देश में विज्ञान, तकनीकी व उद्योगों का विकास कर लोगों को व्यवसाय प्राप्त कराने की ओर भी महर्षि का ध्यान था। इसके लिए भी उन्होंने वैचारिक एवं क्रियात्मक योगदान किया। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में उनकी अग्रणीय व प्रमुख भूमिका थी। उन्होंने गुजराती होकर व संस्कृत का सर्वोत्तम विद्वान होने पर भी राष्ट्रीय एकता व वेद धर्म प्रचार के लिए हिन्दी को अपनाया और उसके लिये राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष व प्रयास किये। यदि इस देश को सरदार पटेल की भांति कुछ और योग्य नेता मिले होते तो आज देश में हिन्दी की जो दशा है, वह उससे कहीं अधिक अच्छी हो सकती थी। गोरक्षा के लिए भी महर्षि दयानन्द का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। उन्होंने अनेक उच्च अंग्रेज अधिकारियों से मिलकर गोरक्षा शुरु करने का प्रयास किया था। इसके लिए उन्होंने गो एवं कृषि रक्षिणी सभा एवं उसका विधान भी तैयार किया था। गो विश्वस्य मातर:, गो विश्वस्य नाभि:, गोरक्षा राष्ट्र रक्षा है, गोहत्या राष्ट्र हत्या के तुल्य है आदि जैसे विचार उनके लेखों व विचारों से ही देश व समाज को मिले। ब्रह्मचर्य एवं सदाचार की प्रतिष्ठा को भी उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि संसार के मत-मतान्तरों में असत्य व मिथ्या विश्वास भरे पड़े हैं जिसका उन्होंने दिग्दर्शन कराकर उन्हें दूर करने का प्राणपन से प्रयास किया। पहले लोगों को रोटी का लालच देकर या डरा कर धर्मान्तरण कर विधर्मी बना दिया जाता था। महर्षि दयानन्द ने वैचारिक, सत्य धर्म व मान्यताओं के आधार पर उस अमानवीय कार्य को रोका ही नहीं अपितु गुणों के आधार पर विधर्मियों को शुद्ध कर सत्य धर्म का अनुयायी बनने का अवसर प्रदान किया जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। विधवाओं के विवाह का उन्होंने वेदों से समर्थन किया और बाल विवाह के निषेध का भी सिद्धान्त देश को दिया। बाल विवाह के विरुद्ध जो कानून बना, वह भी उनके शिष्य श्री हरविलास शारदा जी के प्रयासों से बना था। सती प्रथा को भी उन्होंने वेद विरुद्ध, अनैतिक तथा अमानवीय बताया। मांसाहार व मदिरापान मनुष्य के लिए निषिद्ध कर्म हैं। इसको करने से मनुष्य पापगामी होकर जन्म जन्मान्तरों में दु:ख भोगता है।

पुनर्जन्म को भी उन्होंने युक्ति व तर्क तथा शास्त्रीय प्रमाणों से प्रतिष्ठित किया। महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के ऐसे अनेकानेक कार्य गिनायें जा सकते हैं जिनका देश ही नहीं सारे संसार को लाभ हुआ है।

आर्य समाज के स्थापना दिवस पर महर्षि दयानन्द को स्मरण कर सभी को उनकी विचारधारा व वेदों के प्रचार प्रसार करने का संकल्प लेना चाहिये। आर्य समाज का उद्देश्य वेदों का प्रचार व प्रसार करना अर्थात् सत्य को ग्रहण कर व असत्य को छुड़वाना है। आईये, आज के शुभ दिन हम सब देश व संसार में धर्म व नैतिकता के प्रचार व प्रसार करने का शुभ संकल्प ग्रहण।

वैदिक धर्मचर्चा एवं आध्यात्मिक सम्मेलन

आर्य समाज वेदव्यास डी.ए.वी. विद्यालय विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान में वैदिक धर्मचर्चा एवं आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन दिनांक 25 , 26 मार्च 2015 दिन बुधवार एवं बृहस्पतिवार को किया गया। इसमें वैदिक सिद्धान्तों के ऊपर चर्चा की गई और वेद को संदेश को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया।

-प्रिं. चित्रा नाकरा प्रधाना आर्य समाज

गायत्री यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर सरहिन्द में विक्रमी संवत् २०७२ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर गायत्री यज्ञ का आयोजन 21 मार्च से 28 मार्च 2015 तक किया गया। आठ दिन तक लगातार प्रात: 7:00 से 8:30 बजे तक तथा सायं 4:00 से 5:30 तक गायत्री यज्ञ होता रहा और भारी संख्या में श्रद्धालुओं तथा यजमानों ने गायत्री मन्त्र के द्वारा आहुतियां डालकर पुण्य प्राप्त किया।

-रमेश कुमार सूद संरक्षक आर्य समाज

thearyasamaj.org

आस्था चैनल पर विचार के कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुसूची

अप्रैल 2015 प्रतिदिन रात्रि 9:30 से 10:00 बजे तक

दिनांक	कार्यक्रम/वक्ता का नाम	विषय
01.04.2015	प्रवचन-डा. कमलेश कुमार शास्त्री	आदर्श परिवार- (भाग-5)
02.04.2015	प्रवचन-डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास (भाग-12)
03.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	पंच महायज्ञ भाग(भाग-6)
04.04.2015	प्रवचन-डा. वागीश आचाय	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-1)
05.04.2015	धारावाहिक-पाठशाला एक ज्ञान मन्दिर	(भाग-6) साहस
06.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	प्रेरक प्रवचन
07.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य	,, ,,
08.04.2015	लघु चलचित्र-ये कहां आ गए हम	विज्ञान वरदान या अभिशाप
09.04.2015	प्रवचन-डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास(भाग-13)
10.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-2)
11.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-3)
12.04.201	धारावाहिक-पाठशाला एक ज्ञान मन्दिर	(भाग-7) प्रायश्चित
13.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	प्रेरक प्रवचन
14.04.2015	लघु चलचित्र-एक दिन हम होंगे कामयाब	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
15.04.2015	लघु चलचित्र-ये कहां आ गए हम	फैशन
16.04.2015	प्रवचन-डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास (भाग-14)
17.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-4)
18.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचाय	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-5)
19.04.2015	धारावाहिक-पाठशाला एक ज्ञान मन्दिर	(भाग-8) दया
20.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	प्रेरक प्रवचन
21.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	,, ,,
22.04.2015	लघु चलचित्र- ये कहां आ गए हम	नशा
23.04.2015	प्रवचन-डॉ. विनय विद्यालंकार	व्यक्तित्व विकास (भाग-15)
24.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-6)
25.04.2015	प्रवचन-डॉ. वागीश आचार्य	आदर्श समाज व्यवस्था (भाग-7)
26.04.2015	लघु चलचित्र-एक दिन हम होंगे कामयाब	श्रीनिवासन् रामानुजन्
27.04.2015	प्रवचन-आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	प्रेरक प्रवचन
28.04.2015	आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य	प्रेरक प्रवचन
29.04.2015	लघु चलचित्र-ये कहां आ गए हम	तम्बाकू
30.04.2015	प्रवचन-डॉ. विनय विद्यालंकार	उत्तम संतान निर्माण (भाग-1)

इसका पुन: प्रसारण हर रोज आस्था भजन चैनल पर रात्रि 8:00 से 8:30 बजे तक हो रहा है।

विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज नवांशहर के सौजन्य से डी. ए. एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमैन नवांशहर में दिनांक 21 मार्च 2015 को विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के द्वारा शुरू किया गया। पं. अमित कुमार शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा नव संवत् के विशेष मन्त्रों से आहुतियां डलवाई। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम कुमार भारद्वाज जी मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए कॉलेज के प्रधान तथा आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज जी ने सभी को विक्रमी नव संवत् की बधाई दी। उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा के द्वारा इसी दिन सृष्टि की रचना की गई थी और उसे चलाने के लिए पवित्र वेदों का ज्ञान ऋषियों के माध्यम से दिया था। उन्होंने कहा कि आर्य समाज ही संसार को सही मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। आर्य समाज के पास ऐसा ज्ञान है जो किसी भी अन्य मत या सम्प्रदाय वालों के पास नहीं है। कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके संसार का जो उपकार किया है उस ऋण से उऋण नहीं हुआ जा सकता। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज में फैली कुरीतियों तथा बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज उठाई थी उसी प्रकार आज भी आवश्यकता है कि हम आर्य समाज के नियमों पर चलकर राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करें। इसलिए इस दिन हम सभी को मिलकर आर्य समाज के प्रचार और प्रसार में कैसे वृद्धि हो इस बात पर विचार करना चाहिए और महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। इस अवसर पर सर्वश्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, वीरेन्द्र सरीन, देशबन्धु भल्ला, ललित मोहन पाठक, कुलवन्त राय शर्मा, अरविन्द नारद, एस. के. बरूटा, अमित शर्मा, अक्षय तेजपाल बख्तावर सिंह आदि अन्य महानुभाव उपस्थित थे। **-मन्त्री आर्य समाज नवांशहर**

पृष्ठ 5 का शेष-आर्य समाज की.....

आज प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख चाहता है। क्योंकि वह सुख में सुविधा, सरलता, स्पष्टता अनुभव करता है। तुलनात्मक ढंग से परखा जाए, तो स्पष्ट होता है, कि सुख सरल तथा सस्ता है। दुख प्राय: कष्टदायक और महंगा होता है। जैसे कि फल मिठाइयों की अपेक्षा अधिक लाभदायक, सस्ते और सुखप्रद होते हैं। यही बात सफाई तथा स्वास्थ्य के उदाहरण से स्पष्ट होती है। ऐसे ही विलासिता, फैशन, व्यसन की चीजें महँगी, हानिकारक और दुखदायक होती हैं। अत: आर्य समाज का विचार है, हमारे विवाह आदि धार्मिक संस्कारों, कर्मकाण्डों, त्यौहरों की प्रक्रिया आडम्बर रहित, सरल, स्पष्ट और सुखदायक हो। जिस से सभी इन को सरलता से सम्पन्न करके सुखी हो सकें। जैसे कि बड़ी-बड़ी बारातें, दावतें, बिजली की अत्यधिक जगमगाहट, बड़े-बड़े उपहारों का देन-लेन और एक के बाद एक बढ़ते ठाका, रोक, चुन्नी चढ़ाना आदि के रिवाज बन्द होने चाहियें। सरलता और स्पष्टता की दृष्टि से ही महर्षि ने एक सरल, सर्वगम्य रूप यज्ञों और संस्कारों का दर्शाया है।

वस्तुत: आज हमारे धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक क्रियाकलाप महंगे और जटिल बनते जा रहे हैं। धर्म के नाम पर तीर्थों, व्रतों, पर्वों, पूजाओं और मन्दिरों को आए दिन हम महंगे से महंगा तथा जटिल से जटिल बनाते जा रहे हैं। उस पर भी उन में एक के बाद एक रिवाज बढ़ता चला जा रहा है। आर्य समाज की यह धारणा है, कि सभी प्रकार के काल-स्थान-शास्त्र-व्यक्ति विशेष के मोह एवं पक्षपात से ऊपर उठकर अच्छाई (आर्यता) के आधार पर प्रत्येक नियम, व्यवस्था का निर्धारण करना चाहिए। क्योंकि मानव जाति की भलाई के लिए ही धर्म आदि के नियम होते हैं। अत: हमें मानव जाति के जीवन को हरा-भरा रखने के लिए उस की जड़ को जीवित रखने वाली धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक व्यवस्थायें अपनानी चाहियें। अन्यथा 'छिन्ने मूले नैव पत्रं न पुष्पम्' वाली ही बात हो सकती है। इन्हीं सारी भावनाओं को सामने रखकर महर्षि दयानन्द ने यह अमर सन्देश दिया है, कि 'सर्वसत्य का प्रचार कर, सब को ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़-प्रीतियुक्त कराके, सब से सब को सुखलाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।' यहीं सन्देश हर निर्णय की कसौटी है। आर्य समाज की इस अपूर्वता की दृष्टि से संगठन की यह स्पष्ट मान्यता है, कि हमारा वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन सरल, सादा होना चाहिए। अत: प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति को धूम्रपान, मद्यमान, मांसाहार और विषय-व्यसनों का त्याग कर के शाकाहार ही सेवन करना चाहिए। शाकाहार शरीर के स्वास्थ्य, संवर्धन, संरक्षण के लिए जहां अत्यन्त उपयोगी और लाभप्रद है, वहां मांसाहार, मद्यपान, धूम्रपान आदि व्यसन अनेक रोगों के कारण बनते हैं। इस के साथ शाकाहार मांसाहार आदि से अधिक सस्ती तथा सरल भी है। जैसे शाकाहार का स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है। ऐसे ही जिस धार्मिक कर्मकाण्ड अर्थात् पूजा-पाठ, जप-तप, तीर्थ-देवदर्शन आदि का जीवन तथा हृदय शुद्धि से सीधा सम्बन्ध है। उन्हीं को उसी रूप में आयोजित करना चाहिए। निरर्थक कर्मकाण्ड में समय-धन-श्रम का अपव्यय नहीं होना चाहिए। तभी किसी कर्म के करने का मूलभाव चरितार्थ होता है।

इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है, कि महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज महर्षि के मूल मन्तव्यों को उन्हीं की भावना के अनुरूप प्रचारित करने के कारण महर्षि का अविस्मरणीय स्मारक है। अत: महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए और संसार को सही राह-दिखाने के लिए आर्य समाज को सक्रिय, संजीव, संक्षम, सुदृढ़ बनाना अत्यन्त अपेक्षित है। आर्य समाज के स्थापना दिवस का भी यही मूलभाव है।

thearyasamaj.org

नव विक्रमी सम्वत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर 21 कुण्डीय हवन यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज ओहरी समाज बटाला द्वारा नव विक्रमी संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस श्रद्धा व उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आर्य महिला क्राफ्ट स्कूल के प्रांगण में 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम श्री जतिन्द्र नाथ शर्मा जी द्वारा ध्वजारोहण करने के उपरान्त शुरू किया गया। इस 21 कुण्डीय यज्ञ के ब्रह्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री थे। उन्होंने बहुत सुन्दर ढंग से पवित्र वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ सैकडों लोगों से आहुतियां डलवाई। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री शास्त्री जी ने कहा कि आज के दिन युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके हमें अपनी प्राचीन वैभवशाली व गौरवमयी वैदिक संस्कृति से जुड़ने की जो प्रेरणा दी है वह एक सराहनीय है। उन्होंने कहा कि आदिकाल से हमारी संस्कृति वेदों पर आधारित थी और हम सुखमय जीवन व्यतीत करते थे मगर महाभारत काल के बाद हम वेदों से विमुख होते चले गए जिसका असर यह हुआ कि गुलामी का काला दौर भी सहना पड़ा। इस दौरान हमारे समाज में अनेक प्रकार की बुराईयां पनपने लगी। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके इन बुराईयों के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया वहां देश को स्वतन्त्र कराने के लिए युवा वर्ग में ऐसी क्रान्ति की आग पैदा की जिससे प्रभावित होकर कितने क्रान्तिकारी पैदा हुए जिन्होंने अपना बलिदान देकर भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराया। उन्होंने यह भी कहा कि आज भी समय की आवश्यकता है कि हम उनके बताए आदर्शों को अपनाकर अपनी जीवन पद्धति को वेद शिक्षा के अनुसार अपनाने का प्रण लें। इससे एक दिन पूर्व आर्य समाज द्वारा लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें नगर के प्रमुख लोगों ने जिनमें सर्वश्री कुलदीप महाजन, विनय सुन्दर, पार्षद विनय महाजन, कुलवन्त सिंह, सुनील सरीन, विश्व हिन्दु परिषद के जिला अध्यक्ष रमेश अग्रवाल, भारत विकास परिषद के पंकज महाजन, स्त्री समाज के शशि अग्रवाल, आर्य समाज के रत्न लाल चण्डोक, बलविन्द्र मैहता, वीरेन्द्र विग आदि सैंकड़ों लोग शामिल थे।

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर बटाला में आर्य महिला क्राफ्ट स्कूल के प्रांगण में 21 कुण्डीय हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ में भाग लेते हुये यजमान एवं स्कूली बच्चे।

–मंत्री आर्य समाज बटाला

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।